हिंदी-जापानी वाक्य संरचना के मुख्य घटक एवं व्याकरणिक संयोजन का अध्ययन: सरल वाक्यों के विशेष संदर्भ में

(A Study of the Main Components and Grammatical Composition of Hindi-Japanese Sentence Formation: Focusing on Simple Sentences)

डॉ. सन्मति जैन
सहायक प्रोफेसर (जापानी)
अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा अध्ययन विभाग, भाषा विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

सारांश:

भाषा के संरचनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भाषाई रूपों और उनके उपयोग की प्रक्रिया को समझना है। प्रत्येक भाषा की वाक्य संरचना उसकी विशिष्टता को दर्शाती है, जो न केवल व्याकरणिक नियमों, बल्कि समाज और संस्कृति की सोच को भी परिलक्षित करती है। हिंदी और जापानी दोनों भाषाएँ अपने-अपने भाषाई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, और दोनों की वाक्य संरचना में कई समानताएँ एवं असमानताएँ भी पाई जाती हैं। इस शोधपत्र का उद्देश्य इन दोनों भाषाओं की सरल वाक्य संरचना के मुख्य घटकों एवं व्याकरणिक संयोजन का अध्ययन करना है। हिंदी और जापानी दोनों ही भाषाओं में सरल वाक्य संरचना का शब्दक्रम SOV (कर्ता-कर्म-क्रिया) होता है, जिसमें वाक्य का 'कर्ता' प्रारंभ में, 'कर्म' बीच में और 'क्रिया' वाक्य के अंत में प्रयोग की जाती है। हालाँकि, दोनों ही भाषाओं की वाक्य संरचना में कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। जैसे कि जापानी में हिंदी भाषा की अपेक्षा पार्टिकल्स (कारकों/परसर्गों) का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है, जो किसी प्रयुक्त वाक्य के अंतर्गत विभिन्न घटकों के बीच संबंधों को स्पष्ट करते हैं; जैसे を (ओ), は (वा), に (नि), で (दे), が (गा) आदि पार्टिकल्स। हिंदी में इन पार्टिकल्स को परसर्गों (कारकों) के नाम से जाना जाता है; जैसे 'को', 'में', 'से', 'पर' आदि। इसी प्रकार, शब्दक्रम की अपेक्षा देखें तो जापानी वाक्यों की वाक्य संरचना में हिंदी की अपेक्षा लचीलापन देखा जा सकता है; जबकि, हिंदी वाक्य संरचना अपेक्षाकृत स्थिर प्रतीत होती है। ऐसे ही देखें तो हिंदी वाक्य संरचना में क्रिया के निषेधात्मक रूप नहीं बनते, हिंदी में निषेधात्मकता का भाव प्रकट करने के लिए न, मत, नहीं आदि का योग किया जाता है। जबकि, जापानी में निषेधात्मकता का भाव प्रकट करने के लिए क्रिया में निषेधात्मक प्रत्यय का योग किया जाता है। चूँकि, भाषा अर्जन के दौरान इन सभी संरचनात्मक समानताओं एवं असमानताओं का काफी महत्वपूर्ण योगदान होता है; अत: इस शोध के माध्यम से इन्हें उजागर करने का प्रयत्न किया गया है।

बीज-शब्द:

वाक्य संरचना, सरल वाक्य संरचना, हिंदी की वाक्य संरचना, जापानी की वाक्य संरचना, हिंदी-जापानी वाक्य संरचना के मुख्य घटक, हिंदी-जापानी की सरल वाक्य संरचना का अध्ययन, हिंदी-जापानी सरल वाक्यों का शब्दक्रम।

प्रस्तावना:

सर्वविदित है कि प्रत्येक भाषा अपनी-अपनी व्याकरणिक प्रणालियों और संरचनाओं के माध्यम से संवाद करती हैं। और इन व्याकरणिक प्रणालियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है उस भाषा की वाक्य संरचना, जो उस भाषा के वाक्य को अर्थपूर्ण, स्पष्ट और सही बनाती है। अन्य शब्दों में देखें तो वाक्य संरचना वह प्रणाली है जो यह निर्धारित करती है कि किसी भाषा में शब्दों (जैसे: कर्ता, कर्म, क्रिया आदि) और वाक्यांशों को किस प्रकार से संयोजित किया जाए; ताकि वाक्य स्पष्ट और सही अर्थ प्रदान कर सके। इस प्रकार, वाक्य संरचना न केवल भाषा के निर्माण के तरीके को समझने में मदद करती है; बल्कि, यह भाषा की सुगमता और प्रभावी संवाद को भी सुनिश्चित करती है। इस शोध-पत्र में हिंदी और जापानी भाषा की सरल वाक्य संरचना को समझने का प्रयत्न करेंगे। जिसमें विशेष रूप से इन दोनों भाषाओं की वाक्य संरचना के मुख्य घटकों, शब्दक्रम और उनके आपसी संबंधोंआदि को समझेंगे; ताकि दोनों भाषाओं के वाक्य निर्माण की प्रक्रिया और उनके अंतर्निहित संबंधोंको बेहतर तरीके से समझा जा सके।

हिंदी एवं जापानी भाषा की वाक्य संरचना के मुख्य घटक:

प्रत्येक भाषा की वाक्य संरचना में विभिन्न घटक होते हैं। ये घटक न केवल वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करते हैं, बल्कि वाक्य के अंदर विभिन्न हिस्सों के आपसी संबंधों को भी स्थापित करते हैं। इन घटकों का सही संयोजन वाक्य को अर्थपूर्ण एवं व्याकरणिक दृष्टि से सही बनाता है। इन घटकों में कर्ता, कर्म, क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण, संयोजक और कारक चिह्न आदि शामिल हैं। जिन्हें निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है:

1. कर्ता (Subject):

कर्ता किसी प्रयुक्त वाक्य का वह घटक होता है, जो वाक्य में किसी कार्य का संपादन करता है, अथवा जिसके बारे में वाक्य में जानकारी दी जाती है। हिंदी एवं जापानी दोनों ही भाषाओं के किसी प्रयुक्त वाक्य में वाक्य का कर्ता सामान्यत: वाक्य में सबसे पहले स्थान पर आता है, जो कि मुख्य क्रिया के कार्य को संपादित करता है। ज्ञात हो कि जापानी भाषा के लगभग प्रत्येक वाक्य में वाक्य के कर्ता के साथ कर्ता-सूचक は (वा) अथवा が (गा) पार्टिकल (परसर्ग) का प्रयोग किया जाता है। यह は (वा) अथवा が (गा) पार्टिकल उस व्यक्ति, वस्तु या स्थान आदि को स्पष्ट करता है, जिसके बारे में वाक्य में चर्चा की जा रही है। हालाँकि, हिंदी भाषा में भी कर्ता-सूचक 'ने' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है, परंतु, इसका प्रयोग भूतकाल की सकर्मक क्रियाओं तक ही सीमित है। वर्तमान काल अथवा भविष्य काल में, तथा अकर्मक क्रियाओं के साथ इसका प्रयोग नहीं होता है।

उदाहरण:

<table>
<tr><th>क्र.सं.</th><th>वाक्य</th><th>कर्ता</th><th>कारक</th><th>कर्म</th><th>कारक</th><th>क्रिया</th></tr>
<tr><td rowspan="2">01</td><td>हिंदी वाक्य</td><td>करीना</td><td>0</td><td>पुस्तक</td><td>0</td><td>पढ़ती है।</td></tr>
<tr><td>जापानी वाक्य</td><td>カリナさん
(करीना सान्)</td><td>は
(वा)</td><td>本
(होन्)</td><td>を
(ओ)</td><td>読みます。
(योमिमासु)</td></tr>
<tr><td rowspan="2">02</td><td>हिंदी वाक्य</td><td>करीना</td><td>ने</td><td>पुस्तक</td><td>0</td><td>पढ़ी।</td></tr>
<tr><td>जापानी वाक्य</td><td>カリナさん
(करीना सान्)</td><td>は
(वा)</td><td>本
(होन्)</td><td>を
(ओ)</td><td>読みました。
(योमिमाशिता)</td></tr>
<tr><td colspan="7">उपरोक्त उदाहरण वाक्य क्र. (1) के हिंदी वाक्य में वाक्य के कर्ता 'करीना' के साथ किसी भी कारक का प्रयोग नहीं हुआ है, परंतु, उसी हिंदी वाक्य के अनुदित जापानी वाक्य में वाक्य के कर्ता 'करीना' के साथ は (वा) कारक का प्रयोग हुआ है।
वहीं, उदाहरण वाक्य क्र. (2) के हिंदी वाक्य के कर्ता 'करीना' के साथ कर्ता-सूचक 'ने' कारक का का प्रयोग हुआ है। तथा, उसी हिंदी वाक्य के अनुदित जापानी वाक्य में वाक्य के कर्ता 'करीना' के साथ कर्ता-सूचक 'वा' कारक का प्रयोग हुआ है।</td></tr>
</table>

2. कर्म (Object):

कर्म किसी प्रयुक्त वाक्य का वह घटक होता है, जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है। हिंदी एवं जापानी दोनों ही भाषाओं के किसी प्रयुक्त वाक्य में आमतौर पर वाक्य के कर्ता के बाद 'कर्म' का प्रयोग किया जाता है। ज्ञात हो कि जापानी भाषा के लगभग प्रत्येक वाक्य में वाक्य के कर्म के साथ कर्म-सूचक を (ओ) पार्टिकल का प्रयोग किया जाता है। और, यह を (ओ) पार्टिकल उस व्यक्ति या वस्तु आदि को स्पष्ट करता है, जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है। हालाँकि, हिंदी भाषा में भी वाक्य के कर्म को इंगित करने वाला 'को' परसर्ग होता है, परंतु, जापानी की अपेक्षा इसका प्रयोग बहुत कम किया जाता है। ध्यान रहे कि इस 'को' परसर्ग का प्रयोग 'कर्म' कारक के अतिरिक्त 'संप्रदान' कारक, और कभी-कभी 'अधिकरण' आदि कारकों में भी हो सकता है।

उदाहरण:

<table>
<tr><th>क्र.सं.</th><th>वाक्य</th><th>कर्ता</th><th>कारक</th><th>कर्म</th><th>कारक</th><th>क्रिया</th></tr>
<tr><td rowspan="2">01</td><td>हिंदी वाक्य</td><td>वह</td><td>0</td><td>पानी</td><td>0</td><td>पीता है।</td></tr>
<tr><td>जापानी वाक्य</td><td>彼
(कारे)</td><td>が
(गा)</td><td>水
(मिज़ु)</td><td>を
(ओ)</td><td>飲みます。
(नोमिमासु)</td></tr>
<tr><td rowspan="2">02</td><td>हिंदी वाक्य</td><td>शिक्षक</td><td>ने</td><td>छात्र</td><td>को</td><td>डाँटा।</td></tr>
<tr><td>जापानी वाक्य</td><td>先生
(सेन्सेइ)</td><td>は
(वा)</td><td>学生
(गाकुसेइ)</td><td>を
(ओ)</td><td>叱りました。
(शिकारिमाशिता)</td></tr>
<tr><td colspan="7">उपरोक्त उदाहरण वाक्य क्र. (1) के हिंदी वाक्य में वाक्य के कर्ता 'वह' एवं कर्म 'पानी' के साथ किसी भी कारक का प्रयोग नहीं हुआ है, परंतु, उसी हिंदी वाक्य के अनुदित जापानी वाक्य में वाक्य के कर्ता 'कारे' के साथ は (वा) कारक का एवं कर्म 'मिज़ु' के साथ を(ओ) कारक का प्रयोग हुआ है।
वहीं, उदाहरण वाक्य क्र. (2) के हिंदी वाक्य के कर्ता 'शिक्षक' के साथ कर्ता-सूचक 'ने' कारक का एवं कर्म 'छात्र' के साथ 'को' कारक का प्रयोग हुआ है। तथा उसी हिंदी वाक्य के अनुदित जापानी वाक्य में वाक्य के कर्ता 'सेन्सेइ' के साथ は (वा) कारक का एवं कर्म 'गाकुसेइ' के साथ を(ओ) कारक का प्रयोग हुआ है।</td></tr>
</table>

3. क्रिया (Verb):

क्रिया किसी प्रयुक्त वाक्य की वह घटक होती है, जो वाक्य में किसी कार्य के होने को व्यक्त करती है। क्रिया को किसी भी वाक्य का प्रमुख घटक माना जाता है; क्योंकि इसके बिना वाक्य अधूरा होता है। यह वाक्य के कर्ता एवं कर्म के संबंध को भी दिखाती है। हिंदी एवं जापानी दोनों ही भाषाओं के किसी प्रयुक्त वाक्य में आमतौर पर वाक्य के अंत में 'क्रिया' आती है।

उदाहरण:

<table>
<tr><th>क्र.सं.</th><th>वाक्य</th><th>कर्ता</th><th>कारक</th><th>कर्म</th><th>कारक</th><th>क्रिया</th></tr>
<tr><td rowspan="2">01</td><td>हिंदी वाक्य</td><td>नेहा</td><td>0</td><td>अखबार</td><td>0</td><td>पढ़ती है।</td></tr>
<tr><td>जापानी वाक्य</td><td>ネハさん
(नेहासान्)</td><td>は
(वा)</td><td>新聞
(शिन्बुन्)</td><td>を
(ओ)</td><td>読みます。
(योमिमासु)</td></tr>
<tr><td colspan="7">उपरोक्त हिंदी एवं जापानी वाक्य में क्रमशः 'पढ़ती है' एवं 'योमिमासु' वाक्य की क्रियाएँ हैं।</td></tr>
</table>

4. विशेषण (Adjective):

विशेषण किसी प्रयुक्त वाक्य का वह घटक होता है, जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता, गुण, रूप, आकार, संख्या आदि को व्यक्त करता है। हिंदी और जापानी दोनों ही भाषाओं के वाक्यों में विशेषणों का प्रयोग आमतौर पर संज्ञा के पूर्व किया जाता है। विशेषण किसी प्रयुक्त वाक्य को अधिक स्पष्ट या विशिष्ट बनाने का काम करते हैं।

उदाहरण:

वाक्य	कर्ता	कारक	विशेषण	कर्म	कारक	क्रिया
हिंदी वाक्य	वह	0	बड़ा	बैग	0	लिये हुये है।
जापानी वाक्य	彼 (कारे)	が (गा)	大きい (ओ-की-)	かばん (कबान्)	を (ओ)	持っています。 (मोत्ते इमासु)
उपरोक्त हिंदी एवं जापानी वाक्य में क्रमशः 'बड़ा' एवं 'ओ-की-' वाक्य में प्रयुक्त विशेषण हैं।						

5. क्रिया विशेषण (Adverb):

क्रिया विशेषण वे शब्द होते हैं; जो क्रिया, विशेषण या दूसरे क्रिया-विशेषणों की विशेषता बताते हैं। हिंदी और जापानी दोनों ही भाषाओं के वाक्यों में इनका प्रयोग क्रिया को अधिक सटीक और स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए किया जाता है। ये शब्द क्रिया की प्रकृति, समय, स्थान या मात्रा आदि को बताते हैं; जैसे, क्रिया किस प्रकार हो रही है? कब हो रही है? कहाँ हो रही है? या कितनी बार हो रही है? आदि।

उदाहरण:

वाक्य	कर्ता	कारक	क्रिया विशेषण	क्रिया
हिंदी वाक्य	वह	0	धीरे	लिखती है।
जापानी वाक्य	彼女 (कानोजो)	は (वा)	ゆっくり (युक्कुरि)	書きます (काकिमासु)
उपरोक्त हिंदी एवं जापानी वाक्य में क्रमशः 'धीरे' एवं 'युक्कुरि' वाक्य में प्रयुक्त क्रिया विशेषण हैं।				

6. संयोजक (Conjunction):

संयोजक वे शब्द होते हैं, जो दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों या विचारों को आपस में जोड़ते हैं। हिंदी और जापानी दोनों ही भाषाओं के वाक्यों में संयोजकों का प्रयोग वाक्य को अधिक स्पष्ट और प्रवाहपूर्ण बनाने के लिए किया जाता है। विशेष रूप से विचारों को जोड़ने, विपरीत विचारों को व्यक्त करने, कारण और प्रभाव आदि को बताने, समय के प्रवाह को व्यक्त करने, और कई अन्य कनेक्टिव क्यूज़ (connective cues) देने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। इन संयोजकों का सही प्रयोग भाषा में संवाद को अधिक प्रभावशाली और स्पष्ट बनाता है; जैसे- और, लेकिन, क्योंकि, यदि आदि संयोजक शब्द हैं।

उदाहरण:

वाक्य	वाक्य1	संयोजक शब्द	वाक्य2
हिंदी	वह विश्वविद्यालय में पढ़ता है।	लेकिन	पार्ट-टाइम काम भी करता है
जापानी	彼は大学で勉強をしています。 (कारे वा दाइगाकु दे बेन्क्यो ओ शिते इमासु)	が、 (गा)	アルバイトもしています。 (अरुबाइतो मो शिते इमासु)
उपरोक्त हिंदी एवं जापानी वाक्य में क्रमश: 'लेकिन' एवं 'गा' वाक्य में प्रयुक्त संयोजक शब्द हैं, जो दो वाक्यों अथवा विचारों को जोड़ रहे हैं।			

7. कारक (Case Marker):

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनके संबंध कीसूचना मिलती है, उसे कारक कहते हैं। कारक को कारक चिह्न अथवा परसर्ग भी कहा जाता है। हिंदी में प्रमुख कारक सात हैं, और अगर संबोधन को भी कारक माने तो यह संख्या आठ हो जाती है। कारक चिह्न को जापानी में 'जोशि' कहा जाता है। आधुनिक जापानी पाठ्य-पुस्तकों में 'कारक' के लिए 'पार्टिकल' शब्द अधिक प्रचलित है। जापानी भाषा में कारक का प्रयोग हिंदी की अपेक्षा प्रचुर मात्रा में किया जाता है। अत: जापानी भाषा का अध्ययन करते समय इनका समुचित ज्ञान करना अत्यावश्यक है। ज्ञात हो कि जापानी में कुछ ऐसे कारक भी हैं, जो आमतौर पर हिंदी भाषा में नहीं दिखाई देते हैं। जैसे, जाने के अर्थ में गंतव्य स्थान पर लगने वाला दिशा सूचक へ (ए) कारक आदि। यहाँ पर पाठकों के सामान्य बोध के लिए हिंदी एवं जापानी के कारकों को निम्नलिखित तालिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है:

हिंदी एवं जापानी में कारक/परसर्ग:

कारक का नाम	हिंदी में कारक चिह्न	जापानी में कारक चिह्न
कर्ता	ने	は (वा), が (गा)
कर्म	को	を (ओ)
करण	से, द्वारा	で (दे)
संप्रदान	को, के लिए	に (नि), ために (तामे नि)
अपादान	से, से अलग	から (कारा), より (योरि)
संबंध	का, के, की, रा, रे, री	の (नो)
अधिकरण	में, पर	に (नि), で (दे)
नोट: जापानी भाषा में उपर्युक्त कारकों के अतिरिक्त 「へ」 'ए' (गंतव्य/स्थान सूचक/को), 「も」 'मो' (भी), 「まで」 'मादे' (तक) आदि कारक चिह्नों का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता है।		

उदाहरण वाक्य:

वाक्य	कर्ता कारक		अधिकरण कारक		संप्रदान कारक		कर्म कारक		क्रिया
हिंदी	वह	0	घर	पर	मित्र	को/के लिये	पुस्तक	0	देता है।
जापानी	彼 (कारे)	が (गा)	家 (इए)	で (दे)	友達 (तोमोदाचि)	に (नि)	本 (होन्)	を (ओ)	あげます。 (आगेमासु)

उपरोक्त उदाहरण के हिंदी वाक्य में वाक्य के कर्ता 'वह' एवं कर्म 'पुस्तक' के साथ किसी भी कारक का प्रयोग नहीं हुआ है, परंतु, 'घर' के साथ अधिकरण कारक (पर) एवं 'मित्र' के साथ संप्रदान कारक (को/के लिये) का प्रयोग हुआ है।

वहीं, उसी हिंदी वाक्य के अनुदित जापानी वाक्य में वाक्य के कर्ता 'कारे' (वह) के साथ が (गा) कारक का, कर्म 'होन्' (पुस्तक) के साथ を (ओ) कारक का, 'इए' (घर) के साथ で (दे) कारक का एवं 'तोमोदाचि' (मित्र) के साथ に (नि) कारक का प्रयोग हुआ है। अर्थात् जापानी भाषा में लगभग सभी घटकों के साथ कारकों का प्रयोग हुआ है।

जापानी में प्रयुक्त へ (ए) कारक का उदाहरण वाक्य:

	कर्ता	कारक	गंतव्य स्थान	कारक	क्रिया
जापानी वाक्य	私 (वाताशि)	は (वा)	大学 (दाइगाकु)	へ (ए)	行きます。 (इकिमासु)
हिंदी अर्थ	मैं	0	विश्वविद्यालय	0/को/के लिए	जाता हूँ।

उपरोक्त जापानी वाक्य में 'वाताशि' (मैं) वाक्य का कर्ता, 'दाइगाकु' (विश्वविद्यालय) वाक्य का गंतव्य स्थान, और 'इकिमासु' (जाता हूँ) वाक्य की क्रिया है। जहाँ पर は (वा) एवं へ (ए) वाक्य में प्रयुक्त कारक/ परसर्ग हैं; जो वाक्य में क्रमश: वाक्य के कर्ता एवं वाक्य के गंतव्य स्थान को स्पष्ट कर रहे हैं।

जबकि, उसी जापानी वाक्य के हिंदी अर्थ में वाक्य के कर्ता 'मैं' के साथ किसी भी परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है, तथा वाक्य में प्रयुक्त 'विश्वविद्यालय' शब्द के साथ भी किसी भी कारक/परसर्ग को जोड़ने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह वाक्य बिना परसर्गों के भी पूर्णत: स्पष्ट एवं सहज है। परंतु, ध्यान रहे कि किसी स्थिति विशेष में आवश्यकतानुसार 'विश्वविद्यालय' शब्द के साथ 'को' अथवा 'के लिए' कारक का प्रयोग किया जा सकता है।

हिंदी एवं जापानी भाषा की वाक्य संरचना का शब्दक्रम:

किसी भी भाषा के वाक्य में शब्दों का क्रम एक महत्वपूर्ण पहलु माना जाता है। शब्दक्रम वस्तुत: इस बात को दर्शाता है कि किसी प्रयुक्त वाक्य में अमुक घटक का प्रयुक्त स्थान अथवा क्रम क्या होगा। क्योंकि, शब्दों का सही क्रम किसी भी प्रयुक्त वाक्य के कथ्य को स्पष्ट करने के लिए बहुत ही आवश्यक होता है।

1. हिंदी वाक्य संरचना का शब्दक्रम:

हिंदी वाक्य संरचना का शब्दक्रम SOV (कर्ता-कर्म-क्रिया) होता है। इसमें, वाक्य की क्रिया हमेशा वाक्य के अंत में आती है। हिंदी में कारकों/परसर्गों का प्रयोग वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करने और विभिन्न घटकों के आपसी संबंध को दर्शाने के लिए किया जाता है। आमतौर पर किसी प्रयुक्त वाक्य में वाक्य के कर्ता, कर्म आदि का प्रयोग किया जाता है, परंतु, जब संदर्भ से स्पष्ट हो, तब हिंदी वाक्य संरचना में वाक्य के कर्ता का विलोपन किया जा सकता है। ध्यातव्य हो कि हिंदी वाक्य संरचना में क्रिया के निषेधात्मक रूप नहीं बनते हैं; वाक्य में निषेधात्मकता का भाव प्रकट करने के लिए न, मत, नहीं आदि का योग किया जाता है।

उदाहरण:

हिंदी की सरल वाक्य संरचना का सकारात्मक वाक्य:

कर्ता	कर्म	क्रिया
मैं	पत्र	लिखता हूँ।
उक्त वाक्य में 'मैं' वाक्य का कर्ता, 'पत्र' वाक्य का कर्म और 'लिखता हूँ' वाक्य की क्रिया है।		

हिंदी की सरल वाक्य संरचना का नकारात्मक वाक्य:

कर्ता	कर्म	क्रिया
मैं	पत्र	नहीं लिखता हूँ।
उक्त वाक्य में 'मैं' वाक्य का कर्ता, 'पत्र' वाक्य का कर्म और 'नहीं लिखता हूँ' वाक्य की क्रिया है, जिसमें 'नहीं' का प्रयोग नकारात्मकता का भाव अभिव्यक्त करने के लिए किया गया है।		

2. जापानी वाक्य संरचना का शब्दक्रम:

जापानी वाक्य संरचना का शब्दक्रम SOV (कर्ता-कर्म-क्रिया) होता है, जो इसे हिंदी के समान बनाता है। इसमें, वाक्य की क्रिया आमतौर पर वाक्य के अंत में आती है। जापानी वाक्य संरचना में कारकों/परसर्गों का प्रयोग हिंदी की तुलना में प्रचुरता से होता है, जो कि वाक्य के विभिन्न घटकों के बीच संबंधको स्पष्ट करता है। चूँकि, जापानी वाक्य संरचना के लगभग सभी घटक स्थान अथवा संदर्भ के अनुसार विभिन्न कारकों अथवा परसर्गों से जुड़े हुए होते हैं; अत: घटकों के क्रम का वाक्य के अर्थ पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं दिखाई देता। ध्यान रहे कि हिंदी की भाँति जापानी वाक्य संरचना में भी संदर्भ से स्पष्ट होने पर वाक्य के कर्ता का विलोपन किया जा सकता है। परंतु, हिंदी से भिन्न जापानी वाक्य संरचना में क्रिया का निषेधात्मक रूप क्रिया में निषेधात्मक प्रत्यय लगाकर बनाया जा सकता है।

उदाहरण:

जापानी की सरल वाक्य संरचना का सकारात्मक वाक्य:

	कर्ता	कारक	कर्म	कारक	क्रिया
जापानी वाक्य	私 (वाताशि)	は (वा)	手紙 (तेगामि)	を (ओ)	書きます。 (काकिमासु)
हिंदी अर्थ	मैं	0	पत्र	0	लिखता हूँ।
उपरोक्त जापानी वाक्य में 'वाताशि' (मैं) वाक्य का कर्ता, 'तेगामि' (पत्र) वाक्य का कर्म, और 'काकिमासु' (लिखता हूँ) वाक्य की क्रिया है। जहाँ पर は (वा) एवं を (ओ) वाक्य में प्रयुक्त कारक हैं; जो क्रमश: वाक्य के कर्ता एवं कर्म को स्पष्ट कर रहे हैं।					

जापानी की सरल वाक्य संरचना का नकारात्मक वाक्य:

	कर्ता	कारक	कर्म	कारक	क्रिया
जापानी वाक्य	私 (वाताशि)	は (वा)	手紙 (तेगामि)	を (ओ)	書きません。 (काकिमासेन्)
हिंदी अर्थ	मैं	0	पत्र	0	नहीं लिखता हूँ।
उपरोक्त जापानी वाक्य में 'वाताशि' (मैं) वाक्य का कर्ता, 'तेगामि' (पत्र) वाक्य का कर्म, और 'काकिमासेन्' (नहीं लिखता हूँ) वाक्य की क्रिया है, जिसमें हिंदी की भाँति नकारात्मकता का भाव प्रकट करने के लिए 'नहीं' शब्द का क्रिया में अलग से प्रयोग नहीं किया गया है, बल्कि, वाक्य की क्रिया को ही नकारात्मक प्रत्यय के माध्यम से परिवर्तित कर दिया गया है। वाक्य में प्रयुक्त は (वा) एवं を (ओ) कारक/परसर्ग हैं; जो क्रमशः वाक्य के कर्ता एवं कर्म को स्पष्ट कर रहे हैं।					

हिंदी एवं जापानी वाक्य संरचना में लचीलापन:

यद्यपि, हिंदी और जापानी दोनों ही भाषाओं की वाक्य संरचना का शब्दक्रम समान होता है। तथापि, वाक्य निर्मिति के दौरान कारकों आदि के प्रयोग/अप्रयोग से दोनों ही भाषाओं की वाक्य संरचना के शब्दक्रम में कुछ भिन्नताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। जैसे, जापानी वाक्यों का शब्दक्रम जापानी शब्दों के साथ लगने वाले कारकों की स्थिति पर निर्भर होता है; अतः जापानी शब्दों (कारक सहित) के क्रम को परिवर्तित किया जा सकता है। इस दृष्टि से जापानी वाक्य के शब्दक्रम को हिंदी की अपेक्षा थोड़ा लचीला, तथा हिंदी वाक्य के शब्दक्रम को जापानी की अपेक्षा थोड़ा स्थिर माना जा सकता है।

उदाहरण:

उदाहरण वाक्य (1)							
वाक्य	**कर्ता**	**कारक**	**कर्म1**	**कारक**	**कर्म2**	**कारक**	**क्रिया**
जापानी	ネハさん (नेहा सान्)	は (वा)	タヴィシさん (तविषी सान्)	に (नि)	鉛筆 (एन्पित्सु)	を (ओ)	あげます。 (आगेमासु)
हिंदी	नेहा	0	तविषी	को	पेंसिल	0	देती है।
उदाहरण वाक्य (2)							
वाक्य	**कर्म1**	**कारक**	**कर्ता**	**कारक**	**कर्म2**	**कारक**	**क्रिया**
जापानी	タヴィシさん (तविषी सान्)	に (नि)	ネハさん (नेहा सान्)	は (वा)	鉛筆 (एन्पित्सु)	を (ओ)	あげます。 (आगेमासु)
हिंदी	तविषी	को	नेहा	0	पेंसिल	0	देती है।

उदाहरण वाक्य (3)							
वाक्य	**कर्ता**	**कारक**	**कर्म2**	**कारक**	**कर्म1**	**कारक**	**क्रिया**
जापानी	ネハさん (नेहा सान्)	は (वा)	鉛筆 (एन्पित्सु)	を (ओ)	タヴィシさん (तविषी सान्)	に (नि)	あげます。 (आगेमासु)
हिंदी	नेहा	0	पेंसिल	0	तविषी	को	देती है।
उदाहरण वाक्य (4)							
वाक्य	**कर्म2**	**कारक**	**कर्ता**	**कारक**	**कर्म1**	**कारक**	**क्रिया**
जापानी	鉛筆 (एन्पित्सु)	を (ओ)	ネハさん (नेहा सान्)	は (वा)	タヴィシさん (तविषी सान्)	に (नि)	あげます。 (आगेमासु)
हिंदी	पेंसिल	0	नेहा	0	तविषी	को	देती है।

उपरोक्त जापानी उदाहरण वाक्य क्रमाँक (1), (2), (3) एवं (4) में शब्दों का क्रम बदलने पर भी वाक्य का अर्थ वही रहता है; क्योंकि कारकों द्वारा यह स्पष्ट हो रहा है कि कौन-सा शब्द किस प्रयोजन से किस स्थान पर प्रयोग किया गया है। यदि, इन कारकों को जैसा का तैसा यथास्थान छोड़ दिया जाए; और मात्र संज्ञा शब्दों को ही आपस में बदल दिया जाए; तो संभवतः उपरोक्त जापानी वाक्यों का हिंदी अर्थ पूर्णरूप से बदल जाएगा।

उपसंहारः

इस प्रकार, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हिंदी और जापानी दोनों भाषाओं की वाक्य संरचना में अनेक स्तरों पर समानताएँ भी पाई जाती हैं और कई महत्वपूर्ण असमानताएँ भी विद्यमान हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी और जापानी की सरल वाक्य संरचना को केंद्र में रखकर, उसके प्रमुख घटकों जैसे कर्ता, कर्म, क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि तथा इनके शब्दक्रम पर सीमित चर्चा प्रस्तुत की गई है। जिसमें दोनों भाषाओं के व्याकरणिक ढांचे, वाक्य में प्रयुक्त घटकों की भूमिका तथा शब्दों के क्रम आदि से यह स्पष्ट होता है, कि यद्यपि हिंदी-जापानी की भाषिक जड़ें भिन्न हैं, तथापि कुछ संरचनात्मक विशेषताएँ एक-दूसरे से मेल खाती हैं। हालाँकि, यह अध्ययन अपने आप में प्रारंभिक प्रकृति का ही है, जबकि यह विषय अत्यंत गहराई एवं विविधता से परिपूर्ण है, अतः इसमें आगे और अधिक विस्तार से अनुसंधान की आवश्यकता है। विशेष रूप से जटिल वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, निषेधात्मक वाक्य तथा सांस्कृतिक प्रभावों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन आदि भविष्य में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इस सीमित अध्ययन से प्राप्त कुछ प्रमुख निष्कर्ष निम्नानुसार प्रस्तुत किये गये हैं:

समानताएँ:

1. हिंदी और जापानी दोनों ही भाषाएँ आमतौर पर SOV (कर्ता+कर्म+क्रिया) शब्दक्रम का पालन करती हैं।

2. परसर्गों अथवा कारकों (पार्टिकल्स) का महत्व दोनों ही भाषाओं में है। परंतु, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अगर इन परसर्गों का प्रयोग नियत स्थान पर नहीं किया गया तो वाक्य का अर्थ बदल सकता है।

3. दोनों ही भाषाओं में संदर्भ से स्पष्ट होने पर वाक्य के कर्ता का विलोपन किया जा सकता है।

असमानताएँ:

1. जापानी वाक्य संरचना के लगभग सभी घटकों के साथ कारकों (पार्टिकल्स) का प्रयोग आवश्यक होता है। जबकि, हिंदी वाक्य संरचना के सभी घटकों के साथ कारकों का प्रयोग हो, यह आवश्यक नहीं है।

2. जापानी भाषा के लगभग प्रत्येक वाक्य में वाक्य के कर्ता के साथ कर्ता-सूचक は (वा) अथवा が (गा) पार्टिकल (परसर्ग) का प्रयोग किया जाता है। जबकि, हिंदी भाषा में वाक्य के कर्ता के साथ कर्ता-सूचक 'ने' परसर्ग का प्रयोग भूतकाल की सकर्मक क्रियाओं तक ही सीमित है। वर्तमान काल अथवा भविष्य काल में, तथा अकर्मक क्रियाओं के साथ इसका प्रयोग नहीं होता है।

3. हिंदी की अपेक्षा जापानी वाक्यों में शब्दों का क्रम लचीला माना जा सकता है; क्योंकि, जापानी वाक्य संरचना में वाक्य के शब्दों/घटकों में लगने वाले कारक (पार्टिकल) उस शब्द/घटक के प्रयोग स्थान एवं अर्थ को स्पष्ट कर देते हैं। अत: जापानी शब्दों (कारक सहित) के क्रम को परिवर्तित किया जाना आसान है। इस दृष्टि से जापानी वाक्य के शब्दक्रम को थोड़ा लचीला तथा हिंदी वाक्य के शब्दक्रम को थोड़ा स्थिर माना जा सकता है।

4. हिंदी की अपेक्षा जापानी में कुछ अतिरिक्त कारकों/परसर्गों का भी प्रयोग देखने में आता है; जो आमतौर पर हिंदी वाक्य संरचना में प्रयोग होते नहीं दिखाई देते हैं। जैसे, जाने के अर्थ में (गंतव्य स्थान पर) लगने वाला दिशा सूचक へ (ए) परसर्ग आदि।

5. हिंदी वाक्य संरचना में क्रियाओं के निषेधात्मक रूप नहीं बनते हैं; हिंदी के वाक्यों में निषेधात्मकता का भाव प्रकट करने के लिए न, मत, नहीं आदि का प्रयोग किया जाता है। जबकि, जापानी भाषा में क्रिया के निषेधात्मक रूप बनाने के लिए क्रिया में ही निषेधात्मक प्रत्यय का योग किया जाता है।

संदर्भ-ग्रंथ:

1. गुरु, कामताप्रसाद. (2012). *हिंदी व्याकरण.* नागरी प्रचारिणी सभा, काशी.
2. सिंह, सूरजभान. (2000). *हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण.* साहित्य सहकार, नई दिल्ली.
3. पांडेय, अनिल कुमार. (2010). *हिंदी संरचना के विविध पक्ष.* प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
4. बासुतकर, म.मा. (1985). *हिंदी-मराठी क्रिया पदबंध (व्यतिरेकी विश्लेषण).* केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
5. भारतभूषण. (1984). *हिंदी-पंजाबी क्रिया पदबंध (व्यतिरेकी विश्लेषण).* केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
6. तिवारी, भोलानाथ. (1999). *हिंदी भाषा की रूप संरचना.* साहित्य सहकार, दिल्ली.
7. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ. (2015). *हिन्दी भाषा : संरचना के विविध आयाम. पंचम संस्करण.* राधाकृष्ण प्रकाशन. नई दिल्ली.
8. बाहरी, हरदेव. (2007). *व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना.* लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद.
9. जैन, सन्मति. (2018). *जापानी-अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश*. अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली.
10. Snell, R., & Weightman, S. (2003). *Teach Yourself Hindi (2003 ed.),* McGraw-Hill.
11. M. Tanimori. (1994). *Handbook of Japanese Grammar.* Charles E. Tuttle Publishing.
12. Tsujimura, N. (2013). *An introduction to Japanese linguistics.* Third Edition. John Wiley & Sons.
13. Yamaguchi, T. (2007). *Japanese language in use: An introduction.* Bloomsbury Academic.
14. Tsujimura, N. (2002). *The handbook of Japanese linguistics.* Blackwell Publishers Ltd.
15. Shibatani, M. (1990). *The languages of Japan*. Cambridge University Press.
16. Martin, S. E. (2003). *A reference grammar of Japanese*. University of Hawaii Press.
17. Kuno, S. (1973). *The structure of the Japanese language*. The MIT Press.
18. Jain, Sushama. (2000). *Structures of Japanese and Hindi.* Har-Anand Publications Pvt. Ltd, New-Delhi.
19. Jain, Sushama. Verbs in Context: Usages Patterns of Verbs of Giving and Receiving in Japanese and Hindi. *Japanese Language Education,* 219-235.